

मौखिक परंपरा से डिजिटल कथा तक डिजिटल युग में लोककथाओं का एक समकालीन विश्लेषण

शुभिका शाह*
अंजली शौकीन**

यह लेख लोककथाओं की विकास यात्रा की जाँच, उनकी मौखिक परंपरा की शुरुआत से लेकर डिजिटल कहानी कहने में उनकी आधुनिक अभिव्यक्तियों तक करता है। यह लेख उन तरीकों की जाँच करता है जिनमें डिजिटल प्रौद्योगिकियों ने लोककथाओं के बोलने, साझा करने और उन्हें अनुभव करने की अनुभूतियों को बदल दिया है और साथ ही साथ यह लेख इस परिवर्तन के सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभावों का निरीक्षण भी करता है। यह लेख इस बात पर केंद्रित है कि नवाचार और परंपरा कैसे एक-दूसरे से जुड़े हैं, साथ ही साथ डिजिटल प्लेटफॉर्म समकालीन दर्शकों के लिए लोककथाओं को कैसे परिवर्तित और संरक्षित कर रहे हैं। इस लेख में मौखिक, लिखित और दृश्य मीडिया में सम्मिलित लोककथाओं के फ़ायदे और चुनौतियों को शामिल किया गया है, जिसमें कहानी निर्माण का लोकतंत्रीकरण, सांस्कृतिक विनियोग और बौद्धिक संपदा के खतरे और इन विषयों के आस-पास के नैतिक मुद्दों की चर्चा की गई है। इस लेख में यह भी बताया गया है कि कैसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारतीय ज्ञान परंपरा और डिजिटल शिक्षा की पैरवी की है जो हमारी मौखिक परंपरा से डिजिटल कथा के लिए लोककथाओं का संदर्भ प्रस्तुत करती है।

प्रस्तावना

हजारों वर्षों से लोककथाएँ मानव सभ्यता का एक अनिवार्य घटक रही हैं जो नैतिक शिक्षा, सांस्कृतिक हस्तांतरण और मनोरंजन के साधन के रूप में कार्य करती हैं। इन कहानियों को प्रारंभ में पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक रूप से साझा किया गया था। धीरे-धीरे लिखित ग्रंथों, फिल्मों, नाटकों और हाल ही में

डिजिटल प्लेटफॉर्मों के माध्यम से अभिव्यक्त किया जाने लगा है। यह लेख लोककथाओं के मौखिक परंपरा से डिजिटल कथा में परिवर्तन पर ध्यान केंद्रित करते हुए लोककथाओं की विकास यात्रा का विश्लेषण करता है।

लोककथाएँ मौखिक परंपराओं के रूप में मात्र कहानियाँ ही नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक ताने-बाने

*पीएच.डी. शोधार्थी, गुरु गोबिंद सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय, दिल्ली 110 078

**सह-आचार्य, गुरु गोबिंद सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय, दिल्ली 110 078

का एक अभिन्न अंग हैं जो उन समुदायों के आदर्शों, विश्वासों और जीवन के अनुभवों का प्रतिनिधित्व करती हैं जो उन्हें सुनाते हैं। वे ऐतिहासिक रूप से मनोरंजन, शिक्षा और ऐतिहासिक संरक्षण का प्रमुख माध्यम हैं। लोककथाओं को लिखने की शुरुआत होने से न केवल इन्हें स्थायित्व प्राप्त हुआ है, बल्कि इनका व्यापक प्रसार भी संभव हो पाया है। जब लेखन संप्रेषण का साधन बन गया तब लिखित शब्दों ने इन आख्यानों को मानकीकृत किया, साथ ही सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और व्याख्या में एक नई गतिशीलता भी पेश की।

लोककथाएँ विद्यार्थियों के लिए नैतिक मूल्यों, चरित्रों और विभिन्न अभिव्यक्तियों में अंतर करना आसान बनाती हैं। इसके अलावा, लोककथाएँ काफी हद तक विद्यार्थियों को उनके आलोचनात्मक पठन-कौशल, प्रवाह, शब्दावली और विशेष घटनाओं की समझ की क्षमता विकसित करने में मदद करती हैं। लोककथाएँ विद्यार्थियों में प्रभावी निर्णय लेने की क्षमता भी विकसित करती हैं। लोककथाओं के पात्र लगातार संघर्षों का सामना करते हैं और इन संघर्षों को हल करने के लिए निर्णय लेने में उच्च कौशल की आवश्यकता होती है। परिणामस्वरूप, लोककथाएँ चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में उचित निर्णय लेने के महत्व को प्रदर्शित कर सकती हैं।

आधुनिक डिजिटल युग में लोककथाओं को सुनाने, साझा करने और उनका आनंद लेने का तरीका बहुत बदल गया है। डिजिटल प्लेटफॉर्म एक सहभागी संस्कृति की सुविधा प्रदान करता है जो कहानियों के तेजी से वैश्विक साझाकरण को संभव बनाता है। यह

परिवर्तन अत्याधुनिक कहानी कहने के दृष्टिकोण को अपनाने और पारंपरिक कथाओं को बनाए रखने के बीच संतुलन बनाने के बारे में महत्वपूर्ण मुद्दों को सामने लाता है। यह परिवर्तन इस बात पर भी जोर देता है कि कैसे डिजिटल मीडिया ने सांस्कृतिक विरासत तक पहुँच का लोकतंत्रीकरण किया है। यह लेख गहराई से मौखिक परंपरा से डिजिटल कथा का विश्लेषण करता है जिनमें डिजिटल तकनीक के परिणामस्वरूप लोककथाओं के स्वरूप में आए बदलाव और उनके भविष्य को लेकर विस्तृत चर्चा शामिल है।

लोककथाओं का ऐतिहासिक संदर्भ

मौखिक परंपरा

मौखिक लोककथाएँ अपने स्वभाव से प्रदर्शनकारी, समुदाय विशेष से जुड़ी हुई और लचीली होती हैं। वे अक्सर मौखिक कथा होने के अलावा शरीर की भाषा, चेहरे के भाव और दर्शकों की भागीदारी को शामिल करती हैं। मौखिक कहानी कहने की सभी की अपनी एक शैली होती है, इसलिए हर कथन थोड़ा अलग हो सकता है जो कहानीकार की शैली के साथ-साथ वर्तमान सामाजिक संदर्भों को भी दर्शाता है।

मौखिक लोककथाएँ सामुदायिक संबंधों को सुदृढ़ करती हैं, सांस्कृतिक मूल्य प्रदान करती हैं और शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति करती हैं, क्योंकि वे गतिशील हैं। प्रत्येक कहानीकार कहानी को दर्शकों और स्थिति के अनुकूल बना सकता है। अनुकूलन करने की उनकी क्षमता उनके अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण रही है क्योंकि कहानियों की उपयोगिता सामाजिक ताने-बाने के अनुरूप बदल गई है।

लिखित परंपरा

लिखित लोककथाओं की शुरुआत से निश्चित और सटीक ग्रंथों के अस्तित्व का प्रारंभ हुआ, जिससे लोककथाओं के व्यापक प्रसार और विविधताओं का संरक्षण हुआ। कहानियों को अब भौगोलिक और सांस्कृतिक सीमाओं को पार करते हुए अपने मूल समुदायों के बाहर भी पढ़ा और सुना जाने लगा।

यद्यपि लिखित शब्दों ने कहानियों को मानकीकृत करने और उन्हें भविष्य की पीढ़ियों के लिए संरक्षित रखने के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया है, फिर भी मौखिक कहानी कहने के प्रदर्शनकारी और लचीले पहलुओं का लेखन के परिणामस्वरूप अक्सर हास हुआ है। लिखित शब्दों ने स्थायित्व प्रदान किया, लेकिन कठोरता भी और उन विविधताओं को कम किया जो मौखिक कहानी कहने की अनुमति देते थे। इस बदलाव ने कहानियों के समुदाय से जुड़ाव को कम कर उसे व्यक्तिगत सोच तक सीमित कर दिया।

सिनेमा और टेलीविजन में लोककथाएँ

लोककथाओं का फिल्म और टेलीविजन में प्रयोग शुरू होने से कहानियों के साथ दृश्य और श्रवण के आयाम भी जुड़ गए। इन माध्यमों ने व्यापक दर्शकों तक लोककथाओं की पहुँच को संभव बना दिया और साथ ही यादगार अनुभवों की पेशकश भी की, जिसने लोककथाओं के जादू और नाटकीयता को दैनिक जीवन से जोड़ दिया जो पहले अकल्पनीय था।

पारंपरिक लोककथाओं की कहानियों को फिल्म और टेलीविजन के विभिन्न संस्करणों में बहुत पुनर्व्याख्या और आधुनिकीकरण प्राप्त हुआ

है। ये दुनिया भर में लोककथाओं का प्रचार करने में मदद करते हैं, लेकिन वे मानकीकरण और क्षेत्रीय विविधताओं और चरित्र के उन्मूलन का कारण भी बन सकते हैं। इसके अलावा, फिल्म और टेलीविजन अक्सर आधुनिक समाज के मूल्यों और मानकों को प्रतिबिंबित करते हैं जो कहानियों की मूल सांस्कृतिक संरचना और विषयों को बदल सकते हैं। लोककथाओं को संरक्षित करने और व्यापक स्तर पर प्रसार करने में फिल्म और टेलीविजन महत्वपूर्ण रहे हैं।

डिजिटल युग

डिजिटल युग के आगमन से लोककथाओं को अब वेबसाइट्स, सोशल मीडिया और स्ट्रीमिंग सेवाओं के माध्यम से पाठ, ऑडियो, वीडियो या इंटरैक्टिव सामग्री के रूप में प्रसारित किया जा सकता है। उपयोगकर्ता-जनित सामग्री डिजिटल मीडिया की एक और अन्य विशेषता है जो किसी को भी अपनी लोककथाओं का उत्पादन और वितरण करने में सक्षम बनाती है।

लोककथाएँ अब डिजिटल प्लेटफॉर्म के लिए अधिक व्यापक रूप से सुलभ हैं जो नवाचार और संरक्षण, दोनों को बढ़ावा देती हैं। ये प्लेटफॉर्म विभिन्न पृष्ठभूमि के कहानीकारों के लिए दुनिया भर के दर्शकों के साथ बातचीत करना और अपने विचार प्रस्तुत करना संभव बनाते हैं। डिजिटल युग में ट्रांसमीडिया, कहानी-कथन और इंटरैक्टिव नैरेटिव जैसे नए कहानी कहने के तरीके भी उभरे हैं, जिससे लोककथाओं से प्राप्त होने वाले अनुभवों और समझने के तरीकों का विस्तार हुआ है। डिजिटल मीडिया ने लोककथाओं

को मौखिक परंपरा से लिखित रूपों के माध्यम से और डिजिटल युग में अपने ऐतिहासिक संदर्भ का पालन करके नए मीडिया और सांस्कृतिक परिवर्तनों के लिए निरंतर अनुकूलित किया है।

नवाचार बनाम संरक्षण

कई लोककथाएँ जो खो गई हैं, उन्हें इंटरनेट, आर्काइव और प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग जैसे डिजिटल अभिलेखागार के कारण सहेजा गया है। ये प्रौद्योगिकियाँ सुनिश्चित करती हैं कि अगली पीढ़ियाँ अभी भी पारंपरिक कथाओं तक पहुँच सकें। यूनेस्को की 'मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड' पहल जैसे कार्यक्रम इसे संरक्षित करने के लिए लोककथाओं जैसी अमूर्त सांस्कृतिक संपत्ति को डिजिटलाइज करने के महत्व को रेखांकित करते हैं।

अभिनव प्रयोग

लोककथाओं का अनुभव करने और फिर से बताने के नए और कल्पनाशील तरीकों को इंटरैक्टिव वेबसाइट्स ऐप्स और डिजिटल पुस्तकों सहित डिजिटल कहानी कहने की तकनीकों द्वारा संभव बनाया गया है। अब कहानीकार मल्टीमीडिया घटकों को शामिल कर सकते हैं, इंटरैक्टिव अनुभवों को डिजाइन कर सकते हैं और यहाँ तक कि कहानी कहने की प्रक्रिया में श्रोताओं को भी शामिल कर सकते हैं। डिजिटल कथा के प्रारूपों में अनेक नवाचार संभव हुए हैं, जैसे— इंटरैक्टिव स्टोरी गेम और हाइपरटेक्स्ट फिक्शन जो पारंपरिक कहानियों का अध्ययन करने के लिए एक दिलचस्प और गतिशील दृष्टिकोण प्रदान करते हैं।

सांस्कृतिक परिणाम

संवर्धन

कई संस्कृतियों की लोककथाएँ और अब डिजिटल युग की क्रॉस-सांस्कृतिक आदान-प्रदान की सुविधा ही दुनिया भर के दर्शकों तक पहुँच कर मानव अनुभवों और मूल्यों की गहरी और विविध समझ को विकसित कर सकती है। सोशल मीडिया, यूट्यूब और इंस्टाग्राम कुछ ऐसे प्लेटफॉर्म हैं जो विभिन्न संस्कृतियों के कहानीकारों को अपनी विशिष्ट कहानियों को संप्रेषित करने की अनुमति देते हैं, जिससे दुनिया भर में विभिन्न लोककथा की परंपराओं की समझ को बढ़ावा मिलता है।

दूसरी ओर डिजिटल कथाओं की दुनिया भर में पहुँच के परिणामस्वरूप विशिष्ट सांस्कृतिक पहलुओं पर कम ध्यान दिया जाने लगा है। लोककथाएँ और परंपराएँ समरूप हो सकती हैं, क्योंकि लोकप्रिय कहानियाँ क्षेत्रीय विविधताओं को ग्रहण करती हैं।

सामाजिक निहितार्थ

लोकतंत्रीकरण

डिजिटल प्लेटफॉर्मों ने लोककथाओं का लोकतंत्रीकरण करके हाशिए और स्वदेशी समूहों को आवाज दी है। सोशल मीडिया चैनल और स्टोरीकॉप्स जैसी वेबसाइट्स विभिन्न प्रकार की पृष्ठभूमि वाले लोगों को अपनी कहानियों को बड़े पैमाने पर साझा करने में सक्षम बनाती हैं। हाशिए की संस्कृतियों की लोककथाएँ लोकतंत्र के परिणामस्वरूप फिर से लोकप्रिय हो रही हैं, जिससे इन समूहों को अपनी

कहानियों को फिर से संरक्षित करने और संवर्धन करने का अवसर मिल रहा है।

डिजिटल विभाजन

लोकतंत्रीकरण की संभावना के बावजूद पहुँच और डिजिटल साक्षरता के महत्वपूर्ण मुद्दे भी नजरअंदाज नहीं किए जा सकते हैं। डिजिटल प्रौद्योगिकियाँ सभी समुदायों के लिए समान रूप से सुलभ नहीं हैं जो पहले से मौजूद असमानताओं को और बढ़ा सकती हैं। यह सुनिश्चित करने के लिए कि डिजिटल कहानी कहने से सभी को लाभ हो सकता है और डिजिटल युग में कोई भी सांस्कृतिक समूह पीछे नहीं रह गया है, डिजिटल विभाजन को बंद करने के प्रयास किए जाने चाहिए।

आर्थिक और नैतिक कारक

व्यावसायीकरण

डिजिटल लोककथाओं का मुद्रीकरण, सांस्कृतिक विनियोग और बौद्धिक संपदा से संबंधित महत्वपूर्ण मुद्दों को सामने लाता है। मूल कहानीकारों और संस्कृतियों को महत्व दिया जाना चाहिए और पर्याप्त रूप से मुआवजा भी। सांस्कृतिक आख्यानों के व्यावसायीकरण के परिणामस्वरूप कभी-कभी शोषण भी किया जा सकता है, जिसमें मूल समुदाय को उचित लाभ दिए बिना मुनाफा कमाया जाता है।

नैतिकता

डिजिटल युग में, नैतिक कहानी कहने में कहानियों के स्रोतों को पहचानना, सांस्कृतिक विनियोग से बचना और लोककथाओं के ऐतिहासिक प्रारूप का सम्मान करना शामिल है। लोककथाओं की अखंडता

और प्रामाणिकता को बनाए रखने के लिए, डिजिटल प्लेटफॉर्म और सामग्री उत्पादकों को नैतिक प्रश्नों, जैसे— सच्चाई, ईमानदारी, जेंडर समानता, कर्तव्य बोध आदि और उपयुक्त वितरण में संलग्न होना चाहिए। यहाँ सांस्कृतिक आख्यानों को विकृत होने से बचाना मुख्य दायित्व है।

तकनीकी प्रभाव

इंटरैक्टिव स्टोरीटेलिंग

कृत्रिम बौद्धिकता (आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (ए.आई.)), संवर्धित वास्तविकता (ए.आर.) और आभासी वास्तविकता (वी.आर.) में नवाचारों के लिए लोककथाओं को एक नए तरीके से अनुभव किया जा रहा है। आभासी वास्तविकता और संवर्धित वास्तविकता द्वारा प्रदान किए जाने वाले मनमोहक परिवेश के लिए कहानियाँ पहले के अकल्पनीय तरीकों से जीवन में आती हैं, जिससे उपयोगकर्ता पात्रों और स्थानों के साथ जुड़ सकते हैं। कृत्रिम बौद्धिकता का उपयोग उपयोगकर्ता के निर्णयों पर प्रतिक्रिया करने वाले अनुकूलनीय आख्यानों का निर्माण करके व्यक्तिगत कहानी कहने के अनुभव बनाने के लिए किया जा सकता है।

सामुदायिक जुड़ाव

ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और सोशल मीडिया सामुदायिक जुड़ाव की सुविधा प्रदान करते हैं, जिससे उपयोगकर्ता कहानी कहने की प्रक्रिया में योगदान कर सकते हैं। क्राउडसोर्सिंग प्लेटफॉर्म और सहयोगी कहानी कहने वाली परियोजनाएँ समुदायों को लोककथाओं के

अपने स्वयं के संस्करण बनाने और साझा करने में सक्षम बनाती हैं, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि ये कथाएँ जीवंत और प्रासंगिक बनी रहें।

इन आयामों की जाँच करके हम लोककथाओं पर डिजिटल परिवर्तन के बहुमुखी प्रभाव को समझ सकते हैं। संरक्षण और नवाचार, सांस्कृतिक संवर्धन, नैतिक और आर्थिक विचारों के बीच परस्पर क्रिया इन कथाओं के भविष्य को आकार और विस्तार देती हैं। इन कारकों को संतुलित करना महत्वपूर्ण है, ताकि लोककथाएँ नई तकनीकी संभावनाओं को अपनाते हुए अपने सांस्कृतिक महत्व को बनाए रखते हुए फलती-फूलती और विकसित होती रहें।

निष्कर्ष

लोककथाओं का मौखिक परंपरा से डिजिटल कथा में परिवर्तन सांस्कृतिक मानदंडों में व्यापक परिवर्तन दर्शाता है। डिजिटल प्रौद्योगिकियों ने कहानी कहने की रोमांचक संभावनाओं को खोल दिया है, जिससे अधिक पहुँच, अंतर्क्रियाशीलता और जुड़ाव संभव हो गया है। परिणामस्वरूप लोककथाएँ हमेशा हमारे सांस्कृतिक इतिहास का एक जीवंत पहलू बनी रह सकती हैं, लेकिन यह परिवर्तन अपने साथ कुछ कठिनाइयाँ भी लाता है जिन पर सावधानी से विचार

किया जाना चाहिए। अत्याधुनिक कहानी कहने की तकनीकों को अपनाने और पारंपरिक लोककथाओं की प्रमाणिकता बनाए रखने के बीच एक अच्छा संतुलन बनाना महत्वपूर्ण है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के दौरान इन कहानियों की सांस्कृतिक प्रासंगिकता और विषयगत मूल्य बरकरार रहे हैं, एक सावधानीपूर्वक दृष्टिकोण आवश्यक है।

अंत में मौखिक परंपरा से डिजिटल कहानी कहने के लिए लोककथाओं की प्रगति इस बात पर जोर देती है कि इन जटिलताओं को सोच-समझकर और जिम्मेदारी से सुलझाने की हमारी क्षमता कितनी है। यह इस बात पर जोर देता है कि इन कहानियों की प्रासंगिकता और जीवन शक्ति को संरक्षित करने के लिए रचनात्मकता और अनुकूलनशीलता कितनी महत्वपूर्ण है। यह जरूरी है कि हम आगे बढ़ने के लिए एक गरिमापूर्ण और स्वागत योग्य डिजिटल स्पेस विकसित करें जो लोककथाओं की गहराई और मानव सभ्यता पर इसके स्थायी प्रभाव का सम्मान करता है।

संक्षेप में, इस संतुलन को बनाकर हम इन कहानियों के आकर्षण को साझा करने और अनुभव करने के लिए नए रास्ते तलाश सकते हैं, साथ ही उनमें शामिल सांस्कृतिक विरासत की रक्षा भी कर सकते हैं।

संदर्भ

जिप्स, जे. 2012. अनूठी परी कथा— एक शैली का सांस्कृतिक और सामाजिक इतिहास. प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस.

जेनकिंस, एच. 2006. अभिसरण संस्कृति— जहाँ पुराने और नए मीडिया टकराते हैं. एन.वाई.यू. प्रेस.

———. 2010. ट्रांसमीडिया स्टोरीटेलिंग एंड एंटरटेनमेंट : एन एनोटेटेड सिलेबस. जर्नल ऑफ मीडिया एंड कल्चरल स्टडीज. 24(6), पृ.सं. 943–958.

- डंडेस, ए. 2005. लोकगीत—साहित्यिक और सांस्कृतिक अध्ययन में महत्वपूर्ण अवधारणाएँ. रूटलेज.
- थॉमस, पी.एल. 2019. कहानी कहने का डिजिटल विकास—समय और संस्कृति में कहानी की बदलती प्रकृति. कैम्ब्रिज स्कॉलर्स पब्लिशिंग.
- थॉम्पसन, एस. 1955. लोक-साहित्य का रूपांकन-सूचकांक. इंडियाना यूनिवर्सिटी प्रेस.
- बेरबर, केरिन. 2007. ग्रंथों, व्यक्तियों और जनता का नृविज्ञान—अफ्रीका एवं परे में मौखिक और लिखित संस्कृति. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.
- मिलर, सी.ए. 2008. डिजिटल स्टोरीटेलिंग : इंटरएक्टिव एंटरटेनमेंट के लिए एक निर्माता की मार्गदर्शिका. फोकल प्रेस.
- रयान, एम.एल. 2004. मीडिया भर में कथा—कहानी कहने की भाषाएँ. नेब्रास्का प्रेस विश्वविद्यालय.
- विल्सन, डब्ल्यू. 2010. जीवित लोकगीत—लोगों और उनकी परंपराओं के अध्ययन का एक परिचय. यूटा स्टेट यूनिवर्सिटी प्रेस.